Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 7.025| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-15, Issue-1 | January – February – March 2026

Original Article

मिलिन्द पञ्हों में परिष्कृत शैली की परम्परा निर्वहन

प्रो. (डॉ.) विजय रजक

प्राचार्य,

रामलखन सिंह यादव कॉलेज,औरंगाबाद, बिहार

Manuscript ID:
yrj-150101

ISSN: 2277-7911
Impact Factor – 7.025

Volume 15
Issue 1
Jan-Feb-Mar.- 2026
Pp. 1-3

Submitted: 3 Jan. 2026
Revised: 20 Jan. 2026
Accepted: 10 Feb. 2026
Published: 10 Mar. 2026

Corresponding Author:
प्रो. (डॉ.) विजय रजक

Quick Response Code:

Web. https://yra.ijaar.co.in/

DOI:
10.5281/zenodo.20772764

DOI Link:
https://doi.org/10.5281/zenodo.20772764

''मिलिन्द पञ्हों'' सम्पूर्ण अनुपिटक साहित्य में सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। साहित्य और दर्शन के दृष्टिकोण से मिलिन्द पञ्ह स्थविर बौद्धधर्म का एक बड़ा गौरव-ग्रंथ हैं पाश्चात्य विद्वान तक इसके दार्शनिक और साहित्यिक गौरव पर इतने अधिक मुग्ध हुए कि उन्हें इसमें ग्रीक प्रभाव और विषेषतः प्लेटों के सम्वादों की गन्ध आने लगी थी। यही कारण था कि 1880 ई0 में रमन लिपि में कई प्रसिद्ध संस्करण निकल चुके थे। मिलिन्द पञ्हों जैसा कि इसके नाम से ही विदित है, मिलिन्द प्रश्नों के विवरण और उसके उत्तर पर आधारित ग्रन्थ है।

''मिलिन्द'' शब्द ग्रीक ''मेनाण्डर'' नाम का भारतीय करण है। इस ग्रंथ में मिलिन्द के प्रश्नों का समाधान है, जिसे मदन्त नागसेन ने किया था। अतः मिलिन्द या मेनाण्डर और भदन्त नागसेन के सम्वाद के रूप में यह ग्रन्थ लिखा गया है मिलिन्द पञ्हों में ही मिलिन्द का यवन को राजा कहा गया है और उसकी राजधानी सांगल (वर्तमान स्याल कोट) को बतलाया गया है।

हम यह भी जानते हैं कि दूसरी शताब्दी ई. पूर्व भारत का उत्तरी-पष्चिमी भाग ग्रीक शासकों के हाथ में चला गया था। ग्रीक शासक मेनाण्डर ही मिलिन्द पञ्हों का ''मिलिन्द'' है। स्मिथ ने बतलाया है कि 155 ई. पूर्व मेनाण्डर ने भारत पर आक्रमण किया था। हेमचन्द चौधरी के अनुसार मेनाण्डर का शासन काल प्रथम शताब्दी ई. पूर्व है। स्वयं ''मिलिन्द पञ्हों'' के अनुसार मिलिन्द और नागसेन का अर्विभाव बुद्ध परिनिर्वाण के 500 वर्ष बाद हुआ था। (परिनिब्बान तो ''पंचवस्ससते अतिक्कन्ते'') लेकिन यह भी निर्विवाद सत्य है कि चुकि ग्रीक शासक मेनाण्डर के बाद शीघ्र ही भारत में लुप्त हो गया था और इसकी कोई स्थाई स्मृति भारतीय इतिहास में अंकित नहीं है अतः यदि मिलिन्द पञ्ह की रचना को मिलिन्द और नागसेन के संबंध के आधार पर लिखी गई तो भी वह युग बहुत बाद का नहीं हो सकता।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:
प्रो. (डॉ.) विजय रजक (2026). मिलिन्द पञ्हों में परिष्कृत शैली की परम्परा निर्वहन. Young Researcher, 15(1), 1–3.
https://doi.org/10.5281/zenodo.20772764

Creative Commons

OPEN ACCESS

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 7.025| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-15, Issue-1 | January – February – March 2026

भारत के करीब 2 स्थानों में विशेषतः मथुरा और काबूल ग्रीक राजा मेनाण्डर के सिक्के मिले हैं जिसपर ''बेसिलियस कोटिरम मेनड्रोस'' लिखा हुआ लिमता है। इस सिक्कों पर ''धर्म चक्र परवर्तन' 6 का निशान बना हुआ है, तो मिलिन्द को बौद्ध धर्मावलम्बी होने का प्रमाण प्रस्तुत करता है। मिलिन्द पञ्हों में हम पढ़ते हैं कि भदन्त नागसेन के उत्तर दे संतुष्ट होकर राजा मिलिन्द उनसे अपने को उपासक के रूप में स्वीकार करने की प्रार्थना की थी ''उपासक भन्ते नागसेन धारेथ।'' उसके बाद उसमें अपने पुत्र को राज्यकार्य सौंप कर स्वयं प्रवज्या ग्रहण कर ली। ग्रीक इतिहासकार प्लूटा का कहना है कि मेनाण्डर के मरने के बाद अनेक भारतीय नगरों में उसके अस्थियों के उपर उसकी समाधियाँ बनायी गई थी। अतः पूर्णोक्त विवरण, प्लूटाई का साक्ष्य और राजा मेनाण्डर के सिक्कों पर धर्म चक्र के चिह्न को पाया जाना, मेनाण्डर को बौद्ध धर्मावल्मबी होने को प्रमाणित करता है

पालि मिलन्दः पञ्ह में सात अध्याय है जैसे -

1. बाहिर - कथा
2. लक्खण - पञ्हों
3. विमतिच्छेदन - पञ्हों
4. मेण्डक - पञ्हों
5. अनुमान - पञ्हों
6. धुतंग - पञ्हों
7. ओपम्मकथा -पञ्ह

बाहिर कथा ''मिलिन्द पञ्हों'' की भूमिका है। सर्वप्रथम लेखक ने नागसेन की इस विचित्र कथा को जो अभिधम्म, विनय और सूतों पर समाश्रित है और जिसमें विभिन्न उपमाँए और युक्तियाँ प्रकाशित की गई है जिनका जिक्र किया है। इसमें सावधानीपूर्वक, ज्ञानपूर्वक, बुद्ध शासन सम्बन्धी संदेशों पर विचार किया गया है। इसमें अतिरिकत ग्रीक राजा मिलिन्द के राजधानी सांगल का काव्यमय वर्णन है। तदुपरान्त सात भागों पर विभाजित ग्रन्थ की विषय सूची प्रस्तुत की गई है। इसी प्रकार इसमें मिलिन्द और नागसेन के पूर्व जन्मों की कथा उद्धत की गई है। यहाँ नागसेन ने बड़ी ही चतुरतापूर्वक, राजा मिलिन्द के ही रथ को उदाहरण बनाकर, उन्हें बौद्ध दर्शन के बहुत रोचक और ज्ञानवर्द्धक पद्य को रखने की कोशिश की है।

द्वितीय परिच्छेद में भदन्त नागसेन कहते हैं कि जिस प्रकार ''रथ'' केवल व्यवहारिक शब्द है, ठीक उसी प्रकार व्यक्ति की हालत है। रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान, इन पाँच स्कन्धों पर मेरा अस्तित्व निर्भर है। ''नागसेन'' शब्द केवल व्यवहार में है, यर्थात में नागसेन नाम का कोई व्यक्तित्व विद्यमान नहीं है। इस प्रकार इस परिच्छेद में अनात्मवाद की बहुत सटीक और सषक्त व्याख्या भदन्त नागसेन द्वारा प्रस्तुत की गई है। भदन्त नागसेन ने इसके उदाहरण के लिए व्यक्ति के बाल, युवा और वृद्ध अवस्थ को अन्योनाश्रित बताकर एक विवेचनात्मक पृष्ठभूमि प्रस्तुत की है। अनात्मवाद दर्षन का इतना बढ़िया उदाहरण अन्यत्र कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होता।

उपर्युक्त दो परिच्छेदों के बाद तृतीय परिच्छेद विमतिच्छेदन पञ्ह ने राजा मिलिन्द के संदेहों को, जो कई छोटे-छोटे विषयों पर हुए हैं, उनका निवारण नागसेन द्वारा किया गया है, जैसे- क्या सभी लोग निर्वाण प्राप्त कर लेते हैं? क्या बुद्ध अनुत्तर थे? क्या बुद्ध सर्वज्ञ थे? क्या बुद्ध सर्वदर्शी थे? क्या बुद्ध ब्रह्मचारी थे? क्या उप-सम्पदा ठीक है? स्मृति कितने आकारों में उत्पन्न होते हैं? क्या श्वास का

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 7.025| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-15, Issue-1 | January – February – March 2026

निरोध किया जा सकता है? क्या भगवान बुद्ध का कार्य दुष्कर है? आदि आदि।

''मिलिन्द पञ्ह'8 के चौथे परिच्छेद में राजा मिलिन्द के विरोधी वाक्यों पर आधारित प्रश्नों को सुलझाई गई है। यह बहुत ही लम्बा परिच्छेद है। इस परिच्छेद में मिलिन्द पञ्ह का स्वरूप और शैली प्रकाशित होती है। इसके राजा के मिथयावादिता एवं जटिलता पूर्ण प्रश्नों को बहुत सरलता से जबाब दिया गया है। परिच्छेद में भगवान बुद्ध के उन वाक्यों पर दृष्टिपात किया गया है। जिनमें उन्होंने कहा कि यदि संघ चाहे तो मेरे बाद हुद्रानहुद्र शिद्यापदों को छोड़ सकता है।

पाँचवे परिच्छेद का नाम है - अनुमान पञ्हों एक बार फिर राजा मिलिन्द, भदन्त नागसेन के दर्षन के लिए आते हैं, और उनसे पूछते है - भन्ते नागसेन क्या आपने बुद्ध को देखा है? क्या आपके आचार्यों ने बुद्ध को देखा है? नागसेन चुकि इतिहास वादी और कालवादी नहीं हैं अतः वे धर्मवादी के रूप में उन्हें समझाते हुए कहते हैं कि बुद्ध का धर्म की बुद्ध के होने के लिए प्रमाण के रूप में प्रर्याप्त है। जैसे उत्तम गन्ध के सुगन्ध लगते ही लोग समझ लेते हैं कि कहीं पुष्प पुष्पित अपश्य हुए है। ठीक उसी प्रकार बुद्ध धर्म की धर्माकृत लहर को देखकर कहा जा सकता है कि लोकोत्तर बुद्ध अवश्य हुए होगें।

छठे परिच्छेद में राजा मिलिन्द आचार्य नागसेन से पूछते है कि भन्ते नागसेन, क्या कोई गृहस्थ बिना घर को त्याग, विषय-भोग का आलम्बन करते हुए, स्त्री-पुत्र आदि से धिरा हुआ, माला-गन्ध विलेपन करता हुआ, सोने-चांदी का आस्वादन करता हुआ, निर्वाण पद का साक्षतकार कर सकता है? इसी का उत्तर इस परिच्छेद में दिया गया है कि जिसे धुतंग कथा (अवधूतवतो का निवरण) कहा गया है। इसमें 13 अवधूत नियम बतलाये गये हैं। विशुद्धि मग्ग नामक अनुपिटक साहित्य में इसका विषेष उल्लेख मिलता है।

सातवें परिच्छेद में उपमाओं के माध्यम से बतलाया गया है कि किस प्रकार अर्हत्व की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को नाना गुणों का संधारण करना होता है। किस प्रकार कछुए के पाँच गुण, हिरण के तीन गुण कौवे के दो गुण ग्रहण करने चाहिए।

इन तथयों से हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि मिलिन्द पञ्हों कितना परिष्कृत शैली से भरा हुआ है। यह धार्मिक और दार्षनिक दृष्टि से महाग्रन्थ है ही, इसका ऐतिहासिक महत्व और भाषा शैली भी काफी सजी-सँवरी है। इसमें अभिधम्म, विनय और सुत पिटको के साथ-साथ, कई अनुपिटकों के शंकाओं का भी समाधान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. बौद्ध दर्शन और अनात्मवाद - पृ0 117, 119, 121
2. अक्षरा (म. वि. पत्रिका) 1991
3. मिलिन्द पञ्हों (मूल ग्रन्थ)
4. सच्च संगहो - (डॉ. ब्रजमोहन पाण्डेय नलिन)
5. विशुद्धि मग्गो
6. अष्टांग योग और अष्टांगिक मार्ग – पृ. 81, 83
7. दीप निकाय – पृ. 71
8. धर्मचक्रपवर्तन की मूल्यवत्ता – पृ. 63
9. बौद्ध दर्शन मीमांसा – पृ. 71
10. पालि साहित्य का इतिहास (प. भरत सिंह उपाध्याय)
11. दर्शन - दिग्दर्शन (पं. राहुल सांस्कृत्यायन)